संस्कृत-पाठमाला

प्रथमकक्षातः उच्चकक्षापर्यन्तं संस्कृतभाषायाः सम्पूर्णः अध्ययनक्रमः। प्रत्येकपाठे मूलपाठः, शब्दार्थः, हिन्दीअनुवादः च प्रदत्तः अस्ति।

पाठारम्भः अभ्यासः

प्रथमः पाठः

पुनरावलोकनम्

संस्कृतभाषायाः प्रथमपाठे वचनभेदस्य अभ्यासः क्रियते। एकवचनम्, द्विवचनम्, बहुवचनम् — एतेषां त्रिविधवचनानां ज्ञानं संस्कृतव्याकरणस्य आधारभूतं विषयम् अस्ति। इस प्रथम पाठ में वचन-भेद का अभ्यास किया जाता है। एकवचन, द्विवचन और बहुवचन — ये तीन वचन संस्कृत व्याकरण का मूल आधार हैं।

मुनिः — एकवचनम्, द्विवचनम्, बहुवचनम्

एकवचनम्

एकवचनम्

मुनिः आश्रमे निवसति।

एक मुनि आश्रम में निवास करते हैं। (एकवचन — एक के लिए)

द्विवचनम् तथा बहुवचनम्

द्विवचनम् तथा बहुवचनम्

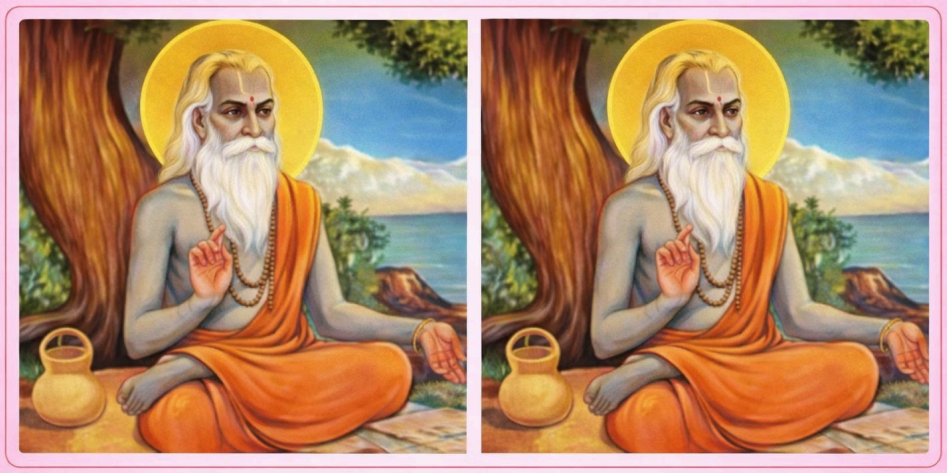

मुनी आश्रमे निवसतः। — दो मुनि आश्रम में निवास करते हैं। (द्विवचन)

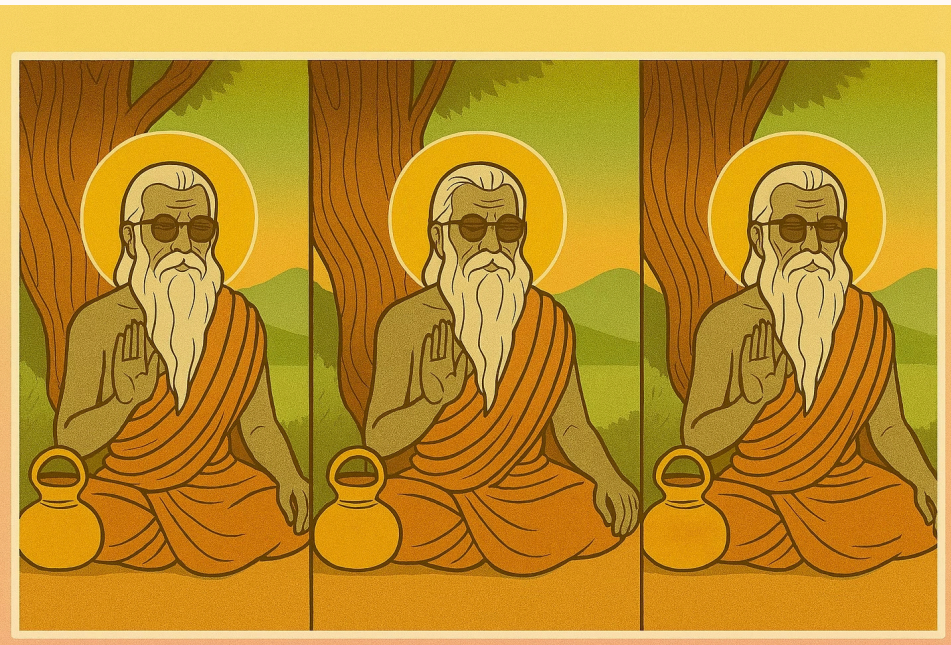

मुनयः आश्रमे निवसन्ति। — अनेक मुनि आश्रम में निवास करते हैं। (बहुवचन)

गुरु-शिष्य-सम्बन्धः

संस्कृत परम्परा में गुरु-शिष्य का सम्बन्ध अत्यन्त पवित्र माना जाता है। गुरु शिष्यों को ज्ञान प्रदान करते हैं और वे आश्रम में एक साथ निवास करते हैं।

गुरुः शिष्यान् पाठयति।

गुरु शिष्यों को पढ़ाते हैं। (एकवचन क्रिया)

गुरुः कुट्यां निवसतः।

गुरु कुटी में निवास करते हैं। (एकवचन)

गुरवः योगाभ्यासं कुर्वन्ति।

गुरुजन योगाभ्यास करते हैं। (बहुवचन)

पितृशब्दः — वचनत्रयम्

पितृशब्दः संस्कृतव्याकरणे एक विशेष प्रकार का शब्द है। इसके तीनों वचनों में रूप देखिए:

एकवचनम्

पिता फलं ददाति।

एक पिता फल देते हैं।

द्विवचनम्

पितरौ फलानि दत्तः।

दो पिता फल देते हैं।

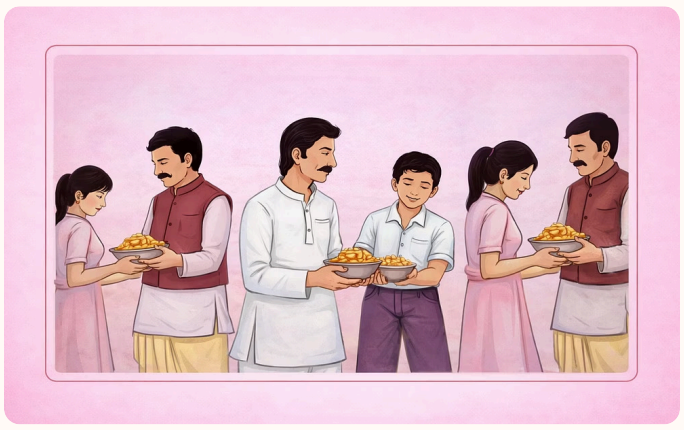

बहुवचनम्

पितरः फलानि ददति।

अनेक पिता फल देते हैं।

नदी — प्रवाहस्य वचनत्रयम्

1	2	3
नदी प्रवहति।	नद्यौ प्रवहतः।	नद्यः प्रवहन्ति।
एक नदी बहती है। (एकवचन)	दो नदियाँ बहती हैं। (द्विवचन)	अनेक नदियाँ बहती हैं। (बहुवचन)

धेनुः — क्षेत्रे चरति

एकवचनम्

धेनुः पश्यति। — एक गाय देखती है।

द्विवचनम् तथा बहुवचनम्

धेनू पश्यतः। — दो गायें देखती हैं।

धेनवः क्षेत्रे चरन्ति। — अनेक गायें खेत में चरती हैं।

माता — जलम् आनयति

एकवचनम्

माता जलम् आनयति।

एक माता जल लाती है।

द्विवचनम्

मातरी जलम् आनयतः।

दो माताएँ जल लाती हैं।

बहुवचनम्

मातरः जलम् आनयन्ति।

अनेक माताएँ जल लाती हैं।

नपुंसकलिङ्गम्

दधि — नपुंसकलिङ्गस्य वचनत्रयम्

नपुंसकलिङ्ग शब्दों के वचन-रूप भी पुल्लिंग और स्त्रीलिंग से भिन्न होते हैं। दधि (दही) का उदाहरण देखिए:

एकवचनम्

दधि पात्रे अस्ति।

दही एक पात्र में है।

द्विवचनम्

दधिनी पात्रयोः स्तः।

दही दो पात्रों में है।

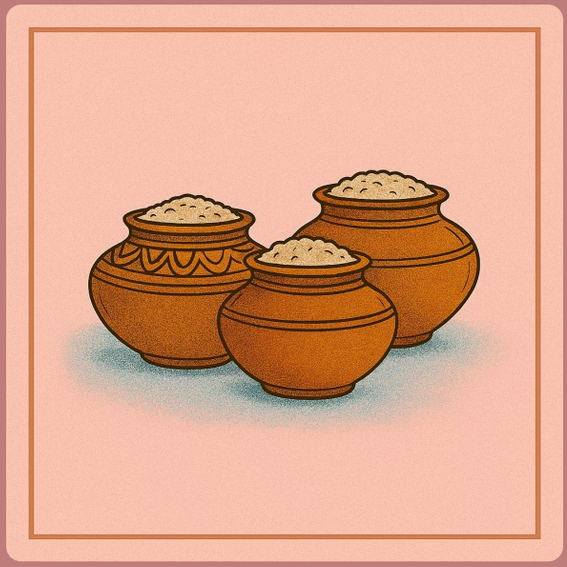

बहुवचनम्

दधिनी पात्रेषु सन्ति।

दही अनेक पात्रों में है।

शब्दार्थः — प्रथमपाठः

प्रथम पाठ के महत्त्वपूर्ण शब्दों के अर्थ नीचे दिए गए हैं। इन्हें ध्यान से पढ़िए और याद कीजिए:

निवसति

निवास करते हैं / रहते हैं

पाठयति

पढ़ाते हैं / शिक्षा देते हैं

धेनुः

गाय — पवित्र पशु

परिणमति

रूपान्तरित होता है / बदलता है

पात्रयोः = दो पात्रों में। मधुकोषेषु = मधुमक्खियों के छत्तों में। गोष्ठे = गोशाला में। वेदाभ्यासम् = वेदों का अभ्यास।

अभ्यासः — प्रथमपाठः

अभ्यास १ — उच्चारण

इन शब्दों का उच्चारण करें और पुस्तिका में लिखें:

- निवसन्ति — अनेक निवास करते हैं
- शिष्यान् — शिष्यों को
- कुट्यां — कुटी में
- योगाभ्यासं — योग का अभ्यास
- नद्यौ प्रवहतः — दो नदियाँ बहती हैं
- धेनू आनयन्ति — गायें लाती हैं

अभ्यास २ — एकपदेन उत्तरत

एक शब्द में उत्तर दीजिए:

- (क) फलं कः ददाति? — पिता
- (ख) मुनयः कुत्र निवसन्ति? — आश्रमे
- (ग) शिष्यान् कः पाठयति? — गुरुः
- (घ) माता का आनयति? — जलम्
- (ङ) गोष्ठे काः निवसन्ति? — धेनवः
- (च) दधि कुत्र अस्ति? — पात्रे

शब्दरूपाणि — प्रथमाविभक्तिः

संस्कृत में तीन लिंगों के शब्दों के रूप प्रथमा विभक्ति में इस प्रकार होते हैं:

शब्दः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
पितृ (पुल्लिंग)	पिता	पितरौ	पितरः
मातृ (स्त्रीलिंग)	माता	मातरौ	मातरः
मुनि (पुल्लिंग)	मुनिः	मुनी	मुनयः

शिक्षण-सङ्केतः — संस्कृतवाक्यानि वदितुम् अभ्यासं कारयत। कर्तारः सुलभाः लोके विज्ञातारस्तु दुर्लभाः। (कर्म करने वाले संसार में सुलभ हैं, परन्तु जानने वाले दुर्लभ हैं।)

द्वितीयः पाठः

चित्रपाठः — महापुरुषाः

इस पाठ में भारत के महान् व्यक्तित्वों का परिचय संस्कृत में दिया गया है। इससे छात्रों को संस्कृत में व्यक्ति-परिचय देने की विधि का ज्ञान होता है।

महात्मागान्धी — राष्ट्रपिता

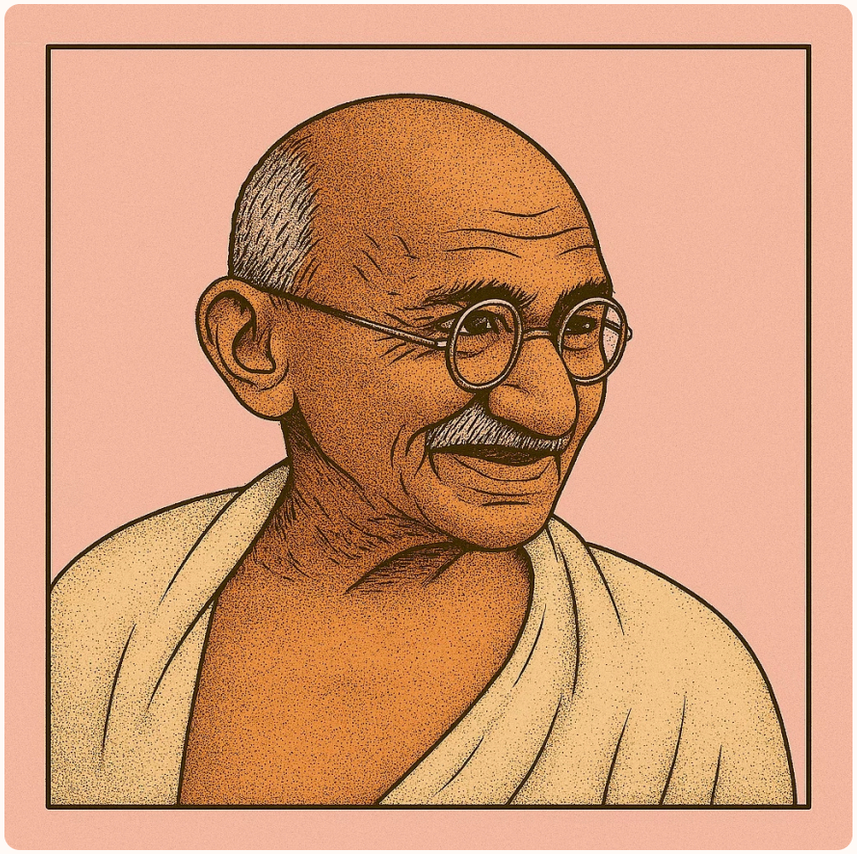

अयं कः?

अयं राष्ट्रपिता मोहनदासकरमचन्द-गान्धी।

ये राष्ट्रपिता मोहनदास करमचन्द गान्धी हैं।

कथम् अयं राष्ट्रपिता?

अयं वर्तमानभारतराष्ट्रस्य जनकः अस्ति।

ये वर्तमान भारत राष्ट्र के जनक हैं।

कथम् अयं प्रसिद्धः?

अयं सत्याग्रहेण अहिंसान्दोलनेन च परतन्त्रं भारतं स्वतन्त्रम् अकारयत्।

इन्होंने सत्याग्रह और अहिंसा आन्दोलन के द्वारा परतन्त्र भारत को स्वतन्त्र कराया।

डॉ० जाकिर हुसैन एवं डॉ० ए०पी०जे० अब्दुल कलाम

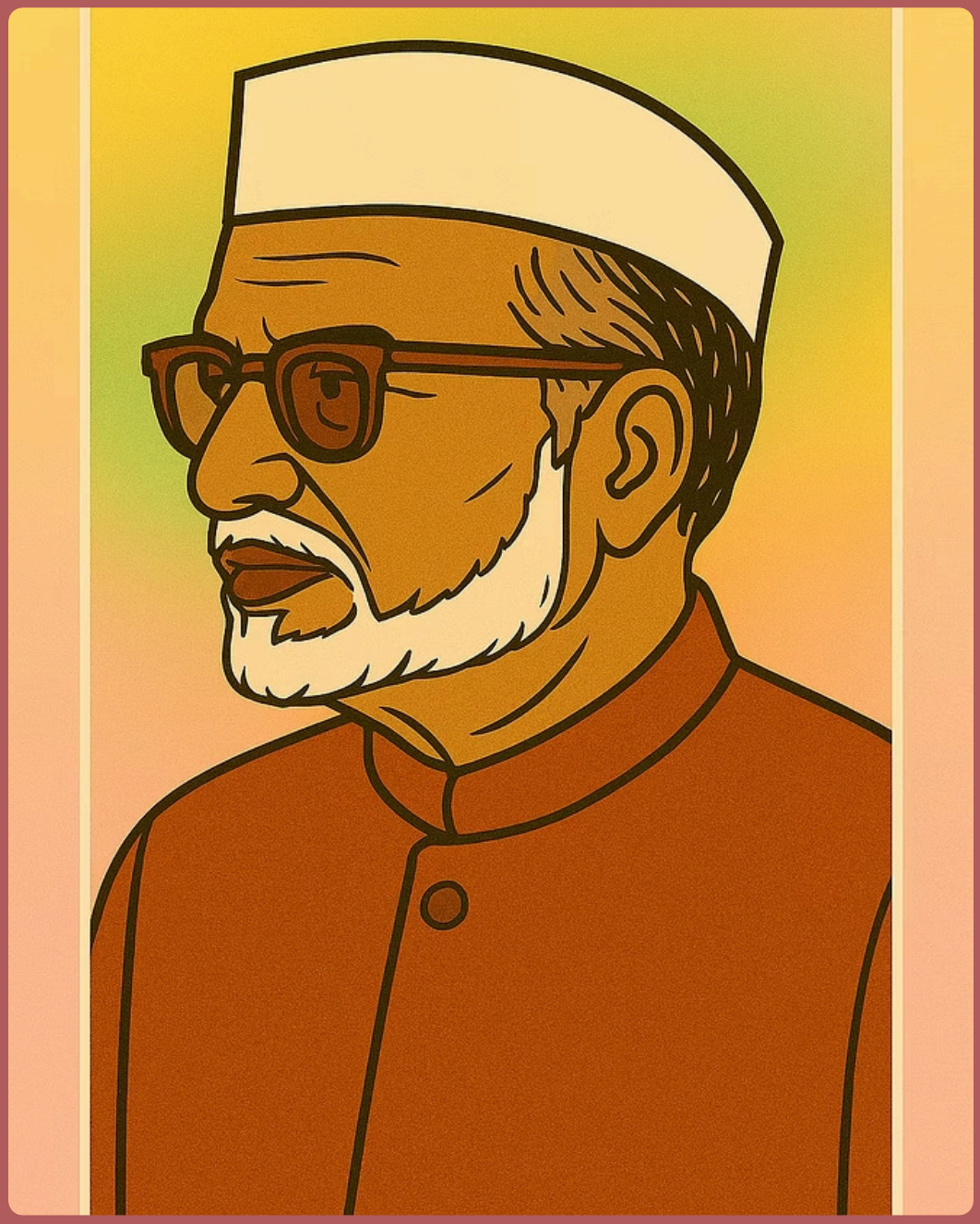

डॉ० जाकिर हुसैन

अयं अस्माकं राष्ट्रस्य तृतीयः राष्ट्रपतिः। ये हमारे देश के तीसरे राष्ट्रपति थे। अयं नूतनायाः प्राथमिक-शिक्षापद्धतेः विशेषज्ञः आसीत्। ये नवीन प्राथमिक शिक्षा पद्धति के विशेषज्ञ थे।

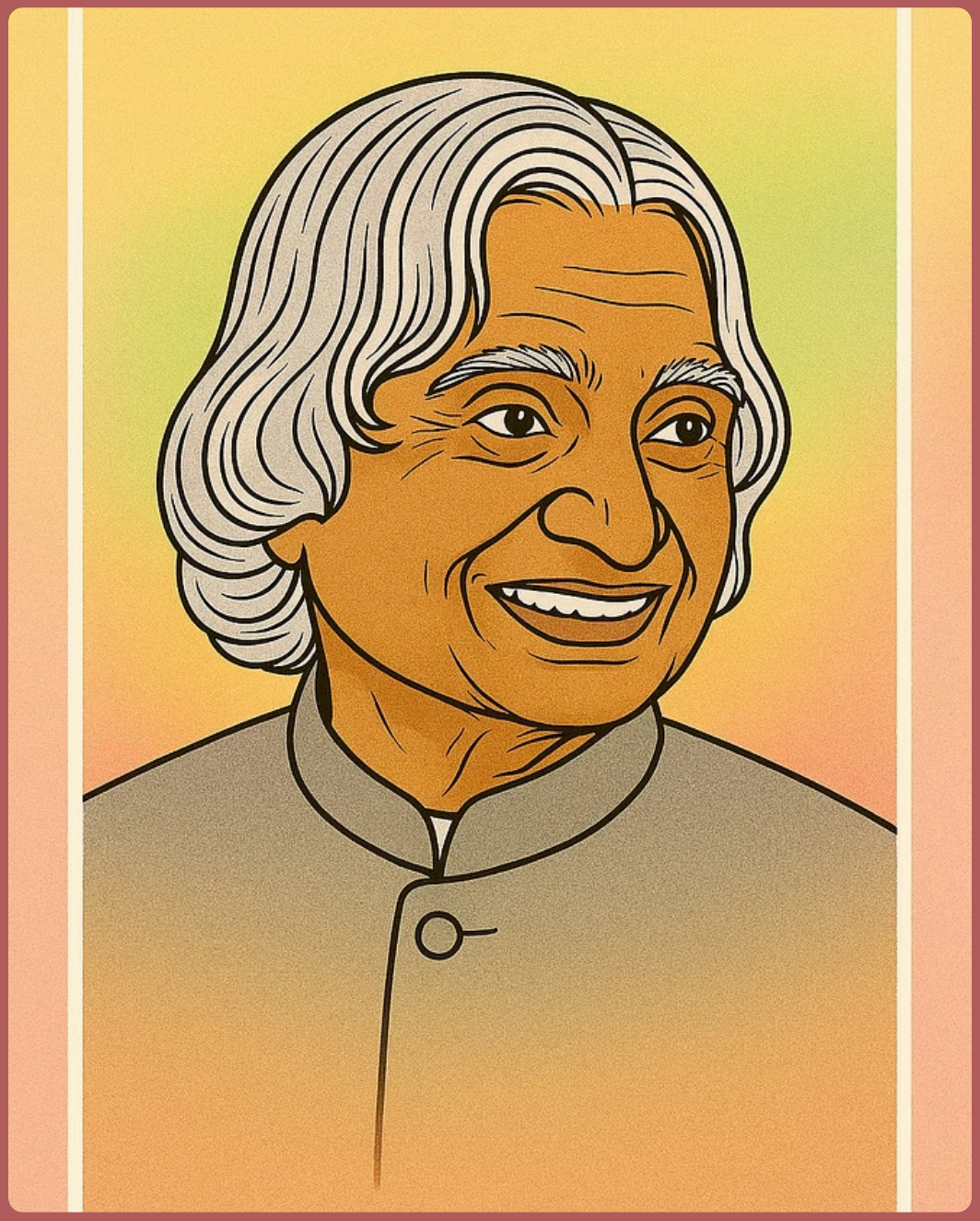

डॉ० ए०पी०जे० अब्दुल कलाम

अयं भारतस्य एकादशः राष्ट्रपतिः। ये भारत के ग्यारहवें राष्ट्रपति थे। अयं महान् वैज्ञानिकः। "मिसाइलमैन" इति नाम्ना प्रसिद्धः। ये महान् वैज्ञानिक और "मिसाइलमैन" के नाम से प्रसिद्ध थे।

डॉ० भीमराव अम्बेडकर एवं महारानी लक्ष्मीबाई

डॉ० भीमराव अम्बेडकर

अयं डॉ० भीमरावअम्बेडकरमहाभागः। ये डॉ॰ भीमराव अम्बेडकर जी हैं। स्वतन्त्रभारतस्य संविधाननिर्माणे अस्य अपूर्वं महत्त्वपूर्णं च योगदानम् आसीत्। स्वतन्त्र भारत के संविधान-निर्माण में इनका अपूर्व और महत्त्वपूर्ण योगदान था।

महारानी लक्ष्मीबाई

इयं महाराज्ञी लक्ष्मीबाई। ये महारानी लक्ष्मीबाई हैं। इयं लक्ष्मीबाई 1857 तमे वर्षे प्रथम स्वातंत्र्यसंग्रामस्य वीराङ्गना आसीत्। ये सन् 1857 के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम की वीरांगना थीं। इन्होंने 23 वर्ष की अल्पायु में ही आंग्ल साम्राज्य का डटकर विरोध किया।

श्रीमती सरोजिनी नायडू एवं श्रीमती इन्दिरा गान्धी

'भारतकोकिला' सरोजिनी नायडू

इयं 'भारतकोकिला' श्रीमतीसरोजिनीनायडूमहाशया। ये 'भारत-कोकिला' श्रीमती सरोजिनी नायडू हैं। इयं विदुषी कवयित्री सुमधुरभाषिणी च आसीत्। ये विदुषी, कवयित्री और मधुर भाषिणी थीं। इयं स्वतन्त्रभारते उत्तरप्रदेशस्य प्रथमं राज्यपालपदम् अभूषयत्। ये स्वतन्त्र भारत में उत्तरप्रदेश की प्रथम राज्यपाल बनीं।

प्रियदर्शिनी इन्दिरा गान्धी

इयं प्रियदर्शिनी इन्दिरागान्धी। ये प्रियदर्शिनी इन्दिरा गान्धी हैं। इयम् अस्माकं देशस्य प्रथम-महिला-प्रधानमन्त्री आसीत्। ये हमारे देश की प्रथम महिला प्रधानमन्त्री थीं। सर्वे जनाः इमां कुशलप्रशासिकारूपेण श्रद्धया स्मरन्ति। सभी लोग इन्हें कुशल प्रशासिका के रूप में श्रद्धा से स्मरण करते हैं।

डॉ० एनी बेसेण्ट — भारतानुरागिणी

इयं का?

इयं भारतानुरागिणी परमविदुषी डॉ० एनीबेसेण्ट महोदया।

ये भारत-प्रेमी परम विदुषी डॉ० एनी बेसेण्ट महोदया हैं।

अस्याः विशेषता

इयं जन्मना आङ्ग्लदेशीया। ये जन्म से अंग्रेज थीं। इयं हिन्दू-विश्वविद्यालयस्य निर्माणाय प्रभूतं धनं विस्तृतं भूखण्डं च अददात्। इन्होंने हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए प्रचुर धन और भूमि दी। इयं देशस्य स्वतन्त्रतायै महत्त्वपूर्णं योगदानम् अकरोत्। इन्होंने देश की स्वतन्त्रता के लिए महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

लखनऊ नगरम् — उत्तरप्रदेशस्य राजधानी

लखनऊ नगरम् उत्तरप्रदेशस्य राजधानी अस्ति। इदं प्राचीनं सुरम्यं च नगरम् अस्ति। अत्र बहूनि दर्शनीयानि स्थलानि सन्ति।

लखनऊ नगर उत्तरप्रदेश की राजधानी है। यह प्राचीन और अत्यन्त सुन्दर नगर है। यहाँ अनेक दर्शनीय स्थल हैं, जैसे — रेजीडेंसी स्थल, इमाम बाड़ा भवन और सचिवालय।

लखनऊस्य दर्शनीयानि स्थलानि

रेजीडेंसी स्थलम्

इदं रेजीडेंसीयलम् अस्ति। इदम् अस्माकं देशभक्तानाम् आत्मत्यागं स्मारयति। यह रेजीडेंसी स्थल है जो हमारे देशभक्तों के आत्मबलिदान की याद दिलाता है। सन् 1857 के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम में यहाँ वीरों ने अपना रक्त बहाया।

सचिवालयभवनम्

अस्मिन् भवने विधानसभायाः विधानपरिषदश्च अधिवेशनानि भवन्ति। इस भवन में विधानसभा और विधानपरिषद् के अधिवेशन होते हैं। यहीं राज्य के मन्त्री, सचिव और अधिकारी राजकार्य सम्पन्न करते हैं।

इमामबाड़ा भवनम्

इदम् अवधाशासकानां स्मारकम् अस्ति। तत्र नवगन्तुकाः बहुधा मार्गं विस्मरन्ति। यह अवध के शासकों का स्मारक है। इसकी छत बिना खम्भों के बनी है। यहाँ नए आगन्तुक प्रायः मार्ग भूल जाते हैं, इसीलिए इसे 'भूलभुलैया' कहते हैं।

तृतीयः पाठः

अभिलाषः — दयामया देवा!

यह पाठ एक सुन्दर प्रार्थना-काव्य है जिसमें ईश्वर से दीनों की रक्षा, मूढ़ता के निवारण और बालकों की रक्षा की प्रार्थना की गई है।

अभिलाषः — पद्यपाठः (सम्पूर्ण अनुवाद सहित)

प्रथमं पद्यम्

दयामया देवा! दीनेषु दयादृष्टिः सदा देया।
प्रतिज्ञा दीनरक्षाया दयालो! जातु नो हेया॥

हे दयामय देव! दीनों पर सदा दयापूर्ण दृष्टि रखनी चाहिए। हे दयालु! दीनों की रक्षा की प्रतिज्ञा कभी नहीं छोड़नी चाहिए।

द्वितीयं पद्यम्

मनुष्या मानवा भूत्वा इदानीं दानवा जाताः।
तदेषा मूढता देशाद् दूरं दूरे त्वया नेया॥

मनुष्य और मानव बनकर इस समय लोग राक्षस बन गए हैं। इसलिए यह मूढ़ता देश से दूर ले जानी चाहिए।

तृतीयं पद्यम्

त्वदुपदेशामृतं त्यक्त्वा विपन्नो हन्त लोकोऽयम्।
तदुद्धाराय चैतेषां प्रभो! गीता पुनर्गेया॥

खेद है कि यह संसार तुम्हारे उपदेशरूपी अमृत को छोड़कर दुखी हो गया है। इसलिए हे प्रभु! इनके उद्धार के लिए गीता पुनः गाई जानी चाहिए।

चतुर्थं पद्यम्

किमधिकं ब्रूमहे भगवन्! विनीतप्रार्थनैकेयम्।
यदेते बालकाः स्वीयाः प्रभो नो विस्मृतिं नेयाः॥

हे भगवन्! हम अधिक क्या कहें, यह हमारी एक विनम्र प्रार्थना है कि ये बालक जो आपके अपने हैं, उन्हें विस्मृति में न ले जाइए।

मत्कुण-पिपीलिका-संवादः — मनोरञ्जनाय

सन्देश: पिपीलिका की श्रमशीलता और आत्मनिर्भरता से प्रेरणा लेनी चाहिए। क्रियासिद्धिः सत्त्वे भवति महतां नोपकरणे।

संवादः (अनुवाद सहित)

मत्कुणः उवाच — खटमल बोला:

कथय भगिनि! किं तव अभिधानम्? — बहन! तुम्हारा नाम क्या है?

अतः श्रमे सततं संलग्ना — इसलिए तुम श्रम में सदा लगी रहती हो।

पिपीलिका उवाच — चींटी बोली:

मम पिपीलिका इति अभिधानम् — मेरा नाम पिपीलिका (चींटी) है।

अस्तु जहीहि, देहि पन्थानम् — छोड़ो, मुझे रास्ता दो।

पञ्चमः पाठः

वयं स्वाधीनाः

यह पाठ डॉ० आज़ाद मिश्र 'मधुकर' द्वारा रचित एक सुन्दर देशभक्ति-गीत है। इसमें स्वतन्त्र भारत की समृद्धि, समानता और शान्ति का वर्णन है।

वयं स्वाधीनाः — गीत (सम्पूर्ण अनुवाद सहित)

प्रथमा पंक्तिः

लोकेऽधुना वयं स्वाधीनाः। तिमिरो गतः प्रकाशो जातः॥

संसार में अब हम स्वतन्त्र हैं। अन्धकार चला गया, प्रकाश आ गया। नया युग आया, नया देश है, सब पुरानी बातें समाप्त हो गईं।

द्वितीया पंक्तिः

पद्मश्रीर्विहसति पुलिनेषु। हासः खेलति जनाधरेषु।

तटों पर कमलों की शोभा खिल रही है। लोगों के अधरों पर हास्य खेल रहा है। सभी धन से युक्त दिखें, देश में कोई दीन न रहे।

तृतीया पंक्तिः

स्त्रीपुंसयोः समोऽस्त्यधिकारः। स्वप्नो जातोऽयं साकारः।

स्त्री और पुरुष दोनों को समान अधिकार है। यह स्वप्न साकार हो गया है। संविधान की नवीन नीति के अनुकूल नई शासन-नीति है।

चतुर्थी पंक्तिः

शान्तिर्मिलति सुरक्षान्यायः। सहकारः सहचरः सहायः।

शान्ति, सुरक्षा और न्याय मिल रहे हैं। सहयोग, सहचर और सहायता उपलब्ध हैं। मन में उच्च विचार पुनः राज कर रहे हैं।

षष्ठः पाठः

प्रयत्ने किं न लभेत

जीवने नास्ति किमपि असाध्यम्। प्रयत्नेन सर्वं खलु साध्यम् इति। जीवन में कुछ भी असाध्य नहीं है। प्रयत्न से सब कुछ निश्चित रूप से साधा जा सकता है। इस पाठ में तीन महान् कर्मवीरों की प्रेरणादायक जीवनगाथाएँ हैं।

सुधाचन्द्र — नृत्यकलानिपुणा

सुधाचन्द्र महोदया एका प्रसिद्धा नृत्यकलानिपुणा अभिनेत्री अस्ति।

सुधाचन्द्र महोदया एक प्रसिद्ध नृत्यकला-निपुण अभिनेत्री हैं।

बाल्यकालादेव सा नृत्याभ्यासं प्रारभत्।

बचपन से ही उन्होंने नृत्य का अभ्यास प्रारम्भ किया।

दुर्भाग्यवशात् एकस्यां दुर्घटनायां तस्याः दक्षिणपादः भग्नः अभवत्।

प्राणरक्षायै चिकित्सकैः तस्याः दक्षिणपादं शरीरात् पृथक् कृतम्।

दुर्भाग्यवश एक दुर्घटना में उनका दाहिना पैर टूट गया और प्राण बचाने के लिए चिकित्सकों ने पैर को शरीर से अलग कर दिया।

आत्मबलेन कृत्रिमपादस्य सहाय्येन सा पुनः नर्तनम् आरब्धवती।

आत्मबल और कृत्रिम पैर की सहायता से उन्होंने पुनः नृत्य आरम्भ किया। आज नर्तन और अभिनय में उनकी कीर्ति फैली हुई है।

भागवत सुब्रह्मण्यम चन्द्रशेखर एवं स्टीफन हॉकिंग्स

चन्द्रशेखरः — क्रिकेट-जादूगर

भारतीयक्रिकेटक्रीडायां 'स्पिन' इति कलायाः ऐन्द्रजालिकः। भारतीय क्रिकेट में 'स्पिन' कला के जादूगर। शैशवे एव 'पोलियो' व्याधिना ग्रस्तः। बचपन में ही पोलियो से ग्रस्त हुए। आत्मबल से 58 टेस्ट मैचों में 242 विकेट लिए। भारत सरकार ने 'पद्मश्री' और अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित किया।

स्टीफन हॉकिंग्स — महान् वैज्ञानिक

स्टीफन हॉकिंग्स 1942 तमे वर्षे जनवरी मासस्य अष्टमे दिनाङ्के जन्म। जन्म 8 जनवरी 1942 को। मोटर न्यूरॉन रोगेण ग्रस्तोऽपि आत्मबलेन स्वकीयं लक्ष्यं प्राप्तवान्। मोटर न्यूरॉन रोग से ग्रस्त होने पर भी आत्मबल से लक्ष्य प्राप्त किया। 'हॉकिंग विकिरण' उनका अद्वितीय योगदान है।

॥ साहसे श्रीः प्रतिवसति ॥ — साहस में ही लक्ष्मी का निवास है।

सप्तमः पाठः

प्रहेलिकाः — संस्कृत-पहेलियाँ

संस्कृत में प्रहेलिका (पहेली) परम्परा अत्यन्त प्राचीन है। इन पहेलियों के माध्यम से भाषा, तर्क और सामान्य ज्ञान का विकास होता है।

प्रहेलिकाः — अनुवाद एवं उत्तर सहित

1

प्रहेलिका १ — जूता (उपानत्)

दन्तैर्हीनः शिलाभक्षी निर्जीवः बहुभाषकः। गुणस्यूतिः समृद्धोऽपि परपादेन गच्छति।

दाँतों से रहित, पत्थर खाने वाला, निर्जीव, बहुत भाषाओं वाला, सूत से सिला, धनवान होने पर भी दूसरे के पैर से चलता है। उत्तरः जूता (उपानत्)

2

प्रहेलिका २ — मयूर

शोभितोऽस्मि शिखण्डेन दीर्घः पक्षैरलङ्कृतः। राष्ट्रियो विहगश्चास्मि, नृत्यं पश्यन्ति मे जनाः।

मैं पंख से सुशोभित, लम्बे पंखों से अलंकृत, राष्ट्रीय पक्षी हूँ और लोग मेरा नृत्य देखते हैं। उत्तरः मयूर (मोर)

3

प्रहेलिका ३ — पत्र (चिट्ठी)

पठितो नास्म्यहं किञ्चित् तथापि साक्षरोऽस्म्यहम्। पादैर्विनैव गच्छामि कथयामि विना मुखम्।

मैंने कुछ नहीं पढ़ा, फिर भी अक्षरों से युक्त हूँ। बिना पैरों के चलता हूँ और बिना मुँह के बात करता हूँ। उत्तरः पत्र (चिट्ठी)

4

प्रहेलिका ५ — राम

रेफादौ मकारोऽन्ते वाल्मीकिः यस्य गायकः। सर्वश्रेष्ठं यस्य राज्यं वद कोऽसौ जनप्रियः।

जिसके नाम के आदि में 'र' और अन्त में 'म' है, जिसके गायक वाल्मीकि हैं और जिसका राज्य सर्वश्रेष्ठ है। उत्तरः राम

अष्टमः पाठः

श्रम एव विजयते

यह पाठ अमेरिका के प्रथम राष्ट्रपति जॉर्ज वाशिंगटन की एक प्रेरणादायक कहानी पर आधारित है जो हमें बताती है कि कार्य छोटा या बड़ा नहीं होता — श्रम ही सबसे बड़ा सम्मान है।

वाशिंगटनस्य कथा — सम्पूर्ण अनुवाद सहित

अमेरिकादेशे एकस्मिन् स्थाने सैनिकानाम् आवासाय निर्माणकार्यं प्रचलद् आसीत्। अमेरिका देश में एक स्थान पर सैनिकों के निवास के लिए निर्माण कार्य चल रहा था।

तत्र द्वारादिनिर्माणहेतोः काष्ठस्य गुरुतरः खण्डः नीयते स्म। केचित् सैनिकाः तं काष्ठखण्डं भूमे उत्थाप्य यानम् आरोपयितुं यत्तमानाः आसन्। वहाँ दरवाजा आदि बनाने के लिए लकड़ी का भारी टुकड़ा ले जाया जा रहा था। कुछ सैनिक उस लकड़ी के टुकड़े को उठाकर गाड़ी पर चढ़ाने का प्रयास कर रहे थे।

तेषां नायकः दूरत एव अधिकबलप्रयोगाय तान् प्रेरयति स्म। उनका नायक दूर से ही उन्हें अधिक बल लगाने के लिए प्रेरित कर रहा था।

अत्रान्तरे कश्चन् तुरङ्गाधिरूढः तत्र आगतः। स अश्वसादी अश्वाद् अवातरत्, निजं कोटपरिधानं च अवतार्य भूमौ न्यदधात्। ततः असौ काष्ठखण्डस्य उन्नयने सैनिकैः साकं बलसाहाय्यम् अकरोत्। इसी बीच एक घुड़सवार वहाँ आया। वह घोड़े से उतरा, अपना कोट उतारकर रख दिया और सैनिकों के साथ मिलकर लकड़ी उठाने में सहायता की।

महाशय! यदा कदाचिद् ईदृशः अवसरः आपतेत्, प्रधानसेनापतिः वाशिंगटनः स्मर्यताम्। — वे स्वयं राष्ट्रपति वाशिंगटन थे! यह जानकर नायक लज्जित हो गया।

नवमः पाठः

सुभाषितानि — सुन्दर वचन

सुभाषित का अर्थ है — सु (सुन्दर) + भाषित (कहा हुआ)। संस्कृत के सुभाषित जीवन के प्रत्येक पहलू पर अमूल्य मार्गदर्शन देते हैं। इन श्लोकों को कण्ठस्थ करना अत्यन्त लाभदायक है।

सुभाषितानि — सम्पूर्ण अनुवाद सहित

क्षणशः कणशश्चैव विद्यामर्थं च चिन्तयेत्। क्षणत्यागे कुतो विद्या कणत्यागे कुतो धनम्॥१॥

प्रतिपल विद्या का और प्रतिकण धन का चिन्तन करना चाहिए। पल का त्याग करने पर विद्या कैसे मिलेगी और कण का त्याग करने पर धन कैसे मिलेगा?

सर्वतीर्थमयी माता सर्वदेवमयः पिता। मातरं पितरं तस्मात् सर्वयत्नेन पूजयेत्॥३॥

माता सभी तीर्थों के समान है और पिता सभी देवताओं के समान है। इसलिए सभी प्रयत्नों से माता और पिता की पूजा करनी चाहिए।

सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात् न ब्रूयात् सत्यमप्रियम्। प्रियं च नानृतं ब्रूयाद् एष धर्मः सनातनः॥५॥

सत्य बोलो, प्रिय बोलो, किन्तु अप्रिय सत्य मत बोलो। और प्रिय लगने वाला असत्य भी मत बोलो — यही सनातन धर्म है।

जाड्यं धियो हरति सिञ्चति वाचि सत्यं मानोन्नतिं दिशति पापमपाकरोति। लक्ष्मीं तनोति वितनोति च दिक्षु कीर्तिं सत्सङ्गतिः कथय किं न करोति पुंसाम्॥६॥

सत्संगति बुद्धि की जड़ता को हरती है, वाणी में सत्य का सिंचन करती है, मान और उन्नति देती है, पापों को दूर करती है, लक्ष्मी बढ़ाती है और दिशाओं में कीर्ति फैलाती है — बताओ, यह मनुष्यों के लिए क्या नहीं करती?

दशमः पाठः

निम्बतरोः साक्ष्यम् — न्याय की कहानी

यह पाठ सत्य और न्याय की विजय पर आधारित एक रोचक कहानी है। इसमें दो मित्रों — मनोहर और धर्मचन्द्र — की कथा है जो यह सिद्ध करती है कि सत्य की सदा जीत होती है।

निम्बतरोः साक्ष्यम् — कथा (सम्पूर्ण अनुवाद)

पुरा एकस्मिन् ग्रामे मनोहरः धर्मचन्द्रश्च द्वे मित्रे प्रतिवसतः। पुराने समय में एक गाँव में मनोहर और धर्मचन्द्र दो मित्र रहते थे। तौ विदेशात् धनम् अर्जयित्वा नीतवन्तौ। विमृश्य तद् धनम् एकस्य वृक्षस्य मूले निक्षिप्तवन्तौ। दोनों ने विदेश से धन कमाकर लाए और सोच-विचार कर एक वृक्ष की जड़ के पास दबा दिया। मनोहरः सरलः सत्यनिष्ठः च आसीत् किन्तु धर्मचन्द्रः अतीव चतुरः छद्मबुद्धिश्च आसीत्। मनोहर सरल और सत्यनिष्ठ था, परन्तु धर्मचन्द्र अत्यन्त चालाक और बेईमान था। धर्मचन्द्र ने चुपके से सारा धन निकाल लिया। राजा अन्वदत् — "श्वः निम्बवृक्षस्य साक्ष्यम् अवाप्य निर्णयः भविता।" राजा ने कहा — कल नीम के वृक्ष की गवाही लेकर निर्णय होगा। धर्मचन्द्र के पिता वृक्ष के कोटर में छिप गए और झूठी गवाही दी। मनोहर ने कोटर में आग लगाई और सत्य उजागर हो गया। राजा ने धर्मचन्द्र और उसके पिता को कारागार भेजा और धन सहित पुरस्कार मनोहर को दिया।

एकादशः पाठः

सिंह-दिलीपयोः संवादः

नाटक-परिचयः यह पाठ महाराज दिलीप और सिंह (कुम्भोदर) के संवाद पर आधारित एक रोचक नाटक है। इसमें क्षत्रिय-धर्म, गुरु-भक्ति और शरणागत की रक्षा का महत्त्व बताया गया है।

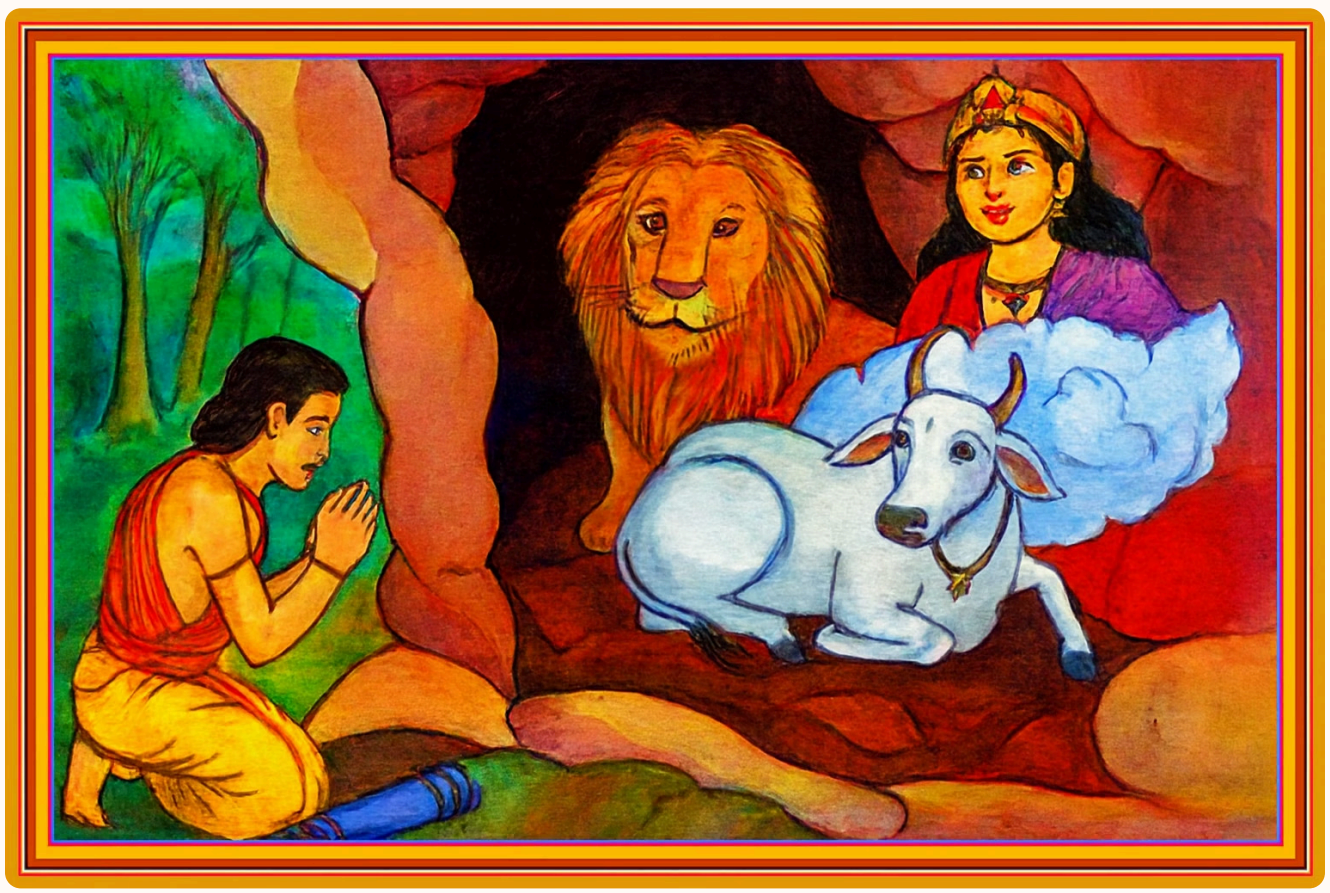

सिंह-दिलीप संवादः — सम्पूर्ण अनुवाद सहित

सिंहः उवाच

"महीपाल! तव श्रमः वृथा। भवान् मां हन्तुं समर्थः न भविष्यति।"

हे राजन्! तुम्हारा परिश्रम व्यर्थ है। तुम मुझे मारने में समर्थ नहीं होगे।

दिलीपः उवाच

"इयं गुरोः धेनुः मया निश्चयेन रक्षणीया। एतदर्थं एतां परित्यज्य मां भक्षतु।"

यह गुरु की गाय मुझे निश्चय से बचानी है। इसके लिए इसे छोड़कर मुझे खा लो।

सिंहः उवाच

"क्षतात् त्रायते इति क्षत्रियः। क्षत्रियत्वे नष्टे सति नास्ति किञ्चित् प्रयोजनं राज्येन।"

क्षत्रिय वह है जो विपत्ति से बचाता है। क्षत्रियता नष्ट होने पर राज्य से भी कोई प्रयोजन नहीं रहता।

नन्दिनी उवाच

"राजन्। मया भवान् परीक्षितः। शरणागतानां परित्राणाय भवतः अनुपमया निष्ठया अहं नितरां प्रसन्ना।"

हे राजन्! मैंने तुम्हारी परीक्षा ली। शरण में आए लोगों की रक्षा के लिए तुम्हारी अनुपम निष्ठा से मैं अत्यन्त प्रसन्न हूँ।

- रामायणे सप्त काण्डानि — बालकाण्डम्, अयोध्याकाण्डम्, अरण्यकाण्डम्, किष्किन्धाकाण्डम्, सुन्दरकाण्डम्, युद्धकाण्डम्, उत्तरकाण्डम्।

द्वादशः पाठः

आदिकविः वाल्मीकिः

पुरा वाल्मीकिः नाम एकः ऋषिः आसीत्। प्राचीन काल में वाल्मीकि नामक एक ऋषि थे। वे संस्कृत के आदि कवि हैं और उनकी रामायण आदिकाव्य कहलाती है।

वाल्मीकि-कथा — सम्पूर्ण अनुवाद सहित

एकदा सः शिष्यैः सह स्नातुं तमसानद्याः तीरम् अगच्छत्।

एक बार वे शिष्यों के साथ स्नान करने तमसा नदी के तट पर गए।

व्याधेन विद्धम् एकं क्रौञ्चपक्षिणम् अपश्यत्। सहचरस्य वियोगेन व्याकुलितायाः क्रौञ्च्याः उच्चैः क्रन्दनम् अश्रुणोत्।

उन्होंने बहेलिये द्वारा मारे गए एक क्रौञ्च पक्षी को देखा और साथी के वियोग में व्याकुल क्रौञ्ची का रुदन सुना।

तत् श्रुत्वा कारुणिकः ऋषिः द्रवितोऽभवत्। क्रौञ्चीक्रन्दनात् जातः ऋषेः शोकः श्लोकरूपेण तस्य मुखात् निरगच्छत्।

यह सुनकर दयालु ऋषि का हृदय द्रवित हो गया और उनके मुख से शोक श्लोक के रूप में प्रकट हो गया।

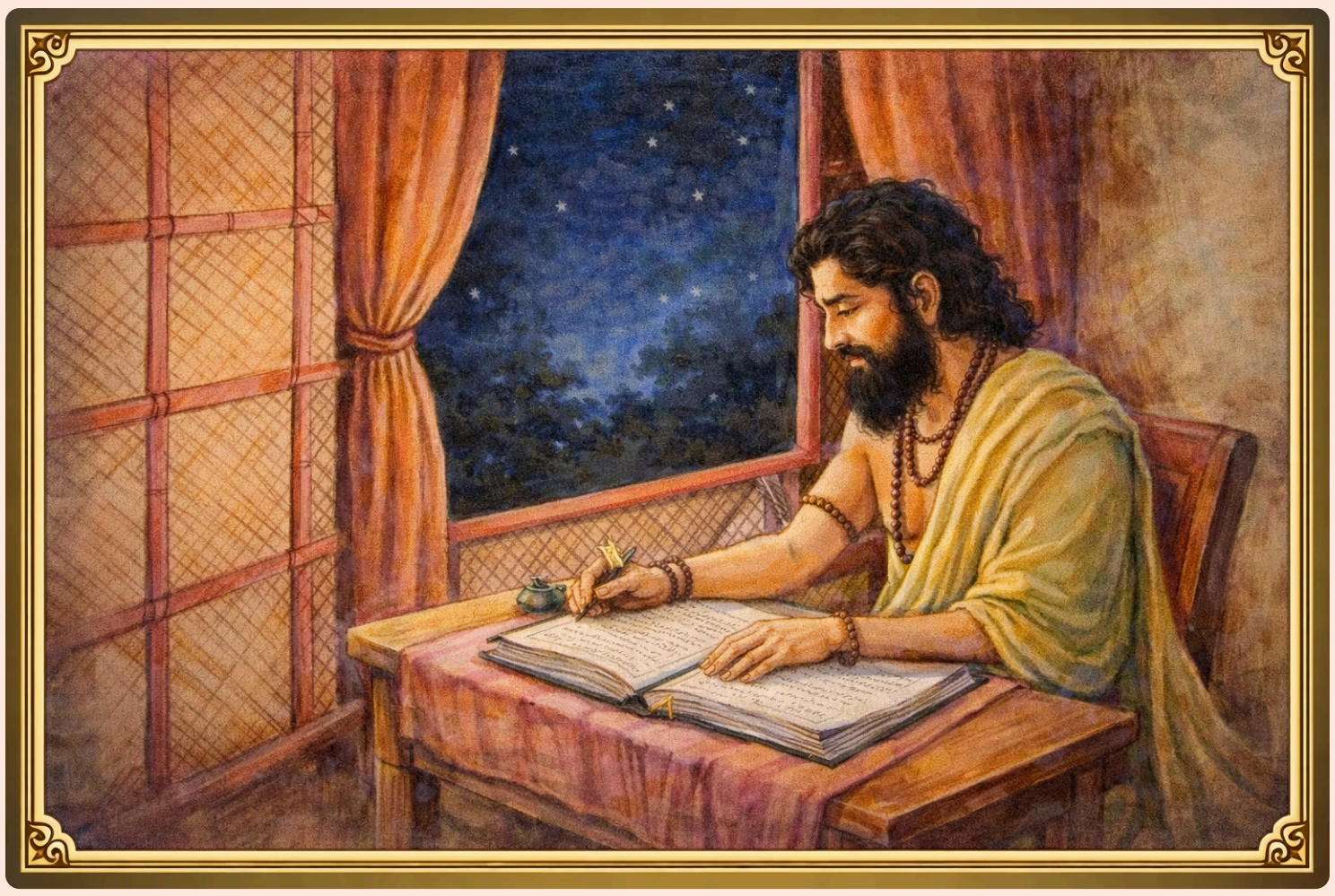

ब्रह्मणः आदेशानुसारेण वाल्मीकिना श्लोकबद्धा रामायणीकथा लिखिता। अयं कविः संस्कृतस्य आदिकविः उच्यते तद्ग्रन्था च आदिकाव्यम् उच्यते।

ब्रह्मा के आदेश से वाल्मीकि ने श्लोकबद्ध रामायण लिखी। ये संस्कृत के आदि कवि और उनकी रचना आदिकाव्य कहलाती है।

त्रयोदशः पाठः

यक्ष-युधिष्ठिर-संवादः

पाठ-परिचयः

यह पाठ महाभारत के यक्षप्रश्न प्रसंग पर आधारित है। यक्ष के प्रश्नों का युधिष्ठिर के उत्तर अत्यन्त तार्किक और नीतिपूर्ण हैं। इससे संस्कृत-तर्कशक्ति और जीवन-दर्शन का ज्ञान होता है।

यह संवाद जीवन के गूढ़ प्रश्नों पर प्रकाश डालता है — माता का महत्त्व, मन की गति, क्रोध का शत्रु-स्वरूप और सत्संगति का प्रभाव।

यक्ष-युधिष्ठिर-प्रश्नोत्तराणि — सम्पूर्ण अनु

यक्ष-युधिष्ठिर-प्रश्नोत्तराणि — सम्पूर्ण अनुवाद

यक्षस्य प्रश्नः (संस्कृत)	युधिष्ठिरस्य उत्तरम् (हिन्दी अनुवाद)
भूमेः गुरुतरं किञ्चित्?	माता गुरुतरा भूमेः। — माता पृथ्वी से भी भारी (महान्) है।
खात् उच्चतरं किञ्चित्?	पिता खात् उच्चतरः। — पिता आकाश से भी ऊँचा है।
वायोः शीघ्रतरं किञ्चित्?	मनः शीघ्रतरं वाताच्च। — मन वायु से भी तेज है।
तृणात् बहुतरं किञ्चित्?	चिन्ता बहुतरी तृणात्। — चिन्ता तृण से भी अधिक है।
पुंसां दुर्जयः शत्रुः कः?	क्रोधः सुदुर्जयः शत्रुः। — क्रोध सबसे दुर्जय शत्रु है।
अनन्तकः व्याधिः कः?	लोभः व्याधिरनन्तकः। — लोभ कभी न समाप्त होने वाला रोग है।
साधुः कीदृशः?	सर्वभूतहितः साधुः। — सभी प्राणियों का हित करने वाला साधु है।
असाधुः कीदृशः?	निर्दयः असाधुः। — निर्दय असाधु है।

चतुर्दशः पाठः

वीराङ्गना विश्पला

वैदिकयुगे कश्चित् 'खेलः' इति नाम्ना प्रसिद्धः राजा आसीत्। वैदिक युग में 'खेल' नामक एक प्रसिद्ध राजा था। उनकी पत्नी विश्पला एक महान् वीराङ्गना थी जिसकी कहानी ऋग्वेद में वर्णित है।

विश्पला-कथा — सम्पूर्ण अनुवाद सहित

वीरता की कहानी

एकस्मिन् युद्धे सा युद्धं कुर्वती शत्रुभिः परिवेष्टिता अभवत्, तस्याः द्वौ अपि पादौ छिन्नौ, सा विकलाङ्गी अभवत्।

एक युद्ध में वह शत्रुओं से घिर गई और उसके दोनों पाँव कट गए, वह विकलांग हो गई।

अद्भुत पुनर्जन्म

परन्तु वीराङ्गना विश्पला हतोत्साहा न अभवत्। परन्तु वीराङ्गना विश्पला निरुत्साह नहीं हुई।

तस्याः साहसं वीरतां च दृष्ट्वा अश्विनीकुमारौ तस्याम् एव रात्रौ आहूतवान्। तौ विश्पलायै लौहनिर्मितौ पादौ अकल्पयताम्। उसका साहस और वीरता देखकर उसी रात अश्विनीकुमारों को बुलाया गया। उन्होंने विश्पला को लोहे के पाँव जोड़ दिए।

सा च वीराङ्गना ततः अतीवोत्साहयुक्ता शत्रुभिः निहितं धनं जितवती। और वह वीराङ्गना अत्यन्त उत्साहित होकर पुनः युद्ध में शत्रुओं का धन जीत लाई।

> क्रियासिद्धिः सत्त्वे भवति महतां नोपकरणे। — महापुरुषों की सफलता साधनों में नहीं, पराक्रम में होती है।

पञ्चदशः पाठः

संस्कृतम् — एकता की भाषा

यह पाठ संस्कृत भाषा की महिमा पर एक सुन्दर गीत है। इसमें संस्कृत को भारतीय एकता की साधिका, विश्वबन्धुत्व की विस्तारिका और ज्ञान-विज्ञान की संगमकर्त्री कहा गया है।

संस्कृतम् — गीत (सम्पूर्ण अनुवाद सहित)

भारतीयैकता-साधकम्

भारतीयैकता-साधकं संस्कृतम्। भारतीयत्व-सम्पादकं संस्कृतम्।

संस्कृत भारतीय एकता को सिद्ध करने वाली है। संस्कृत भारतीयता की भावना का पोषण करने वाली है।

विश्वबन्धुत्व-विस्तारकम्

विश्वबन्धुत्व-विस्तारकं संस्कृतम्। सर्वभूतैकता-कारकं संस्कृतम्।

संस्कृत विश्व-बन्धुत्व को फैलाने वाली है। संस्कृत सभी प्राणियों में एकता लाने वाली है।

त्याग-सन्तोष-सेवाव्रतम्

त्याग-सन्तोष-सेवाव्रतं संस्कृतम्। विश्वकल्याण-निष्ठायुतं संस्कृतम्।

संस्कृत त्याग, सन्तोष और सेवा के व्रत वाली है। संस्कृत विश्व-कल्याण की निष्ठा से युक्त है।

नगरे-नगरे विलसतु

नगरे-नगरे ग्रामे-ग्रामे विलसतु संस्कृतवाणी। सदने-सदने जन-जनवदने जयतु चिरं कल्याणी।

नगर-नगर और गाँव-गाँव में संस्कृत-वाणी विलसित हो। घर-घर और जन-जन के मुख में यह कल्याणकारी भाषा चिरकाल तक जयी हो।

षोडशः पाठः

विश्वबन्धुत्वम्

विश्वस्य सर्वान् जनान् प्रति बन्धुतायाः भावः विश्वबन्धुत्वम् इति कथ्यते। संसार के सभी लोगों के प्रति बन्धुत्व की भावना विश्वबन्धुत्व कहलाती है। यह पाठ मानवता की सबसे बड़ी आवश्यकता पर प्रकाश डालता है।

विश्वबन्धुत्वम् — मुख्य विचार (अनुवाद सहित)

वसुधैव कुटुम्बकम्

अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्। उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्॥

यह मेरा है, यह पराया है — ऐसी गणना छोटे हृदय वालों की है। उदार चरित्र वालों के लिए तो सारी पृथ्वी ही परिवार है।

बन्धुत्वस्य आवश्यकता

सर्वजनहितं सर्वजनसुखं च बन्धुत्वं विना न सम्भवति। सभी का हित और सुख बन्धुत्व के बिना सम्भव नहीं।

युद्धस्य भय

तृतीयस्य युद्धस्य सम्भावना मानवजातिम् आक्रान्तां करोति। तीसरे युद्ध की सम्भावना मानव जाति को भयभीत कर रही है।

समान रक्त

संसारे सर्वेषु मानवेषु समानं रक्तं प्रवहति। संसार के सभी मनुष्यों में एक समान रक्त बहता है।

सर्वं भवन्तु सुखिनः सर्वं सन्तु निरामयाः। सर्वं भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत्।

सभी सुखी हों, सभी रोगमुक्त हों, सभी कल्याण देखें, कोई भी दुःख का भागी न हो।

सप्तदशः पाठः

समाजनिर्माणे नारीणां भूमिका

यह पाठ समाज-निर्माण में नारियों की भूमिका को प्राचीन काल से आधुनिक काल तक दर्शाता है। भारत में स्त्रियाँ सदा से ज्ञान, वीरता और सेवा में अग्रणी रही हैं।

नारीणां महत्त्वम् — प्राचीन एवं आधुनिक (अनुवाद सहित) यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः। — जहाँ नारियों की पूजा होती है, वहाँ देवता निवास करते हैं। वैदिककाल अपाला-घोषा-लोपामुद्रा-प्रभृतयः विदुष्यः नार्यः अभवन्। वैदिक काल में अपाला, घोषा, लोपामुद्रा आदि विदुषी नारियाँ थीं। गार्गी ने याज्ञवल्क्य से शास्त्रार्थ किया।

मध्यकाल आचार्यमण्डनमिश्रस्य पत्नी भारती अतीव विदुषी साक्षात् सरस्वत्यवतारभूता आसीत्। मण्डनमिश्र की पत्नी भारती साक्षात् सरस्वती का अवतार थीं। आधुनिककाल विमानचालने, चन्द्रगमने, जलयानचालने महिलाः अग्रेसरन्ति।

विमान-चालन, चन्द्र-यात्रा, जल-यान चालन में महिलाएँ आगे हैं। ओलम्पिक में कर्णम मल्लेश्वरी ने पदक जीता।

संस्कृत व्याकरण — ध्यातव्यम् (महत्त्वपूर्ण नियम)

1

इदम् / अयम् / इयम्

पुल्लिंगे — अयम् (यह पुरुष) | स्त्रीलिंगे — इयम् (यह स्त्री) | नपुंसकलिंगे — इदम् (यह वस्तु)। विशेषण विशेष्य के लिंग, वचन और विभक्ति के अनुसार बदलता है।

2

यत्-प्रत्यय (योग्यार्थ)

धातु + यत् = चाहिए का अर्थ। दा + यत् = देयम् (देना चाहिए)। नी + यत् = नेयम् (ले जाना चाहिए)। हा + यत् = हेयम् (छोड़ना चाहिए)। गै + यत् = गेयम् (गाना चाहिए)।

3

क्त-प्रत्यय (भूतकाल)

धातु + क्त = भूतकालिक अर्थ। कृ + क्त = कृतम् (किया गया)। पठ् + क्त = पठितम् (पढ़ा गया)। यह क्रिया और विशेषण दोनों रूपों में प्रयुक्त होता है।

4

तव्यत्-प्रत्यय (कर्तव्य)

धातु + तव्यत् = योग्यार्थ। कृ + तव्यत् = कर्तव्यम् (करना चाहिए)। मन् + तव्यत् = मन्तव्यम् (मानना चाहिए)। तीनों लिंगों में रूप होते हैं।

कारकविभक्तिः — व्याकरण-सारांश

संस्कृत में विभक्ति दो प्रकार की होती है — कारकविभक्ति और उपपदविभक्ति। इनका ज्ञान वाक्य-रचना के लिए आवश्यक है।

विभक्तिः	कारकनाम	उदाहरण	हिन्दी अर्थ
प्रथमा	कर्ता	रामः गच्छति	राम जाता है
द्वितीया	कर्म	रामः फलं खादति	राम फल खाता है
तृतीया	करण	कलमेन लिखति	कलम से लिखता है
चतुर्थी	सम्प्रदान	बालकाय ददाति	बालक को देता है
पञ्चमी	अपादान	ग्रामात् आगच्छति	गाँव से आता है
षष्ठी	सम्बन्ध	रामस्य पुस्तकम्	राम की पुस्तक
सप्तमी	अधिकरण	वने वसति	वन में रहता है

पुनरावृत्तिः — व्याकरण-अभ्यास

इस पुनरावृत्ति खण्ड में पूरे वर्ष के व्याकरण का सारांश प्रस्तुत है। इसे ध्यानपूर्वक अध्ययन कीजिए:

वर्ण्णाः

क्रियापदाः

सन्धि

शब्दरूपाः

8	3	3	7
विभक्तयः	वचनानि	लिंगानि	काण्डानि
संस्कृत में आठ विभक्तियाँ होती हैं (सम्बोधन सहित)	एकवचन, द्विवचन, बहुवचन	पुल्लिंग, स्त्रीलिंग, नपुंसकलिंग	रामायणे सप्त काण्डानि भवन्ति

शब्दः	विभक्तिः	वचनम्	रूपम्
राम	तृतीया	बहुवचन	रामैः
रमा	षष्ठी	एकवचन	रमायाः
पुस्तक	सप्तमी	बहुवचन	पुस्तकेषु
नदी	षष्ठी	एकवचन	नद्याः

संस्कृतं जयतु!

संस्कृत केवल एक भाषा नहीं, यह भारतीय सभ्यता, संस्कृति और ज्ञान-परम्परा की आत्मा है। इस पाठमाला के माध्यम से छात्र न केवल भाषा सीखते हैं, अपितु जीवन-मूल्य, नैतिकता और राष्ट्रभक्ति का भी ज्ञान प्राप्त करते हैं।

भाषा-ज्ञानम्

वचन, विभक्ति, लिंग का सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त हुआ।

कथा-ज्ञानम्

वाल्मीकि, विश्पला, वाशिंगटन की प्रेरणादायक कथाएँ।

काव्य-ज्ञानम्

अभिलाषः, वयं स्वाधीनाः, सुभाषितानि का पठन।

संस्कृति-ज्ञानम्

महापुरुषों का परिचय और राष्ट्रीय चेतना का विकास।

नगरे-नगरे ग्रामे-ग्रामे विलसतु संस्कृतवाणी।
सदने-सदने जन-जनवदने जयतु चिरं कल्याणी॥

नगर-नगर और गाँव-गाँव में संस्कृत-वाणी विलसित हो। घर-घर और जन-जन के मुख में यह कल्याणकारी भाषा चिरकाल तक विजयी हो।

पुनः आरभत

अभ्यासपुस्तिका